OM 21 DELHI_Page 1 and 2 14/01/2015 07:53 Page 5

गणतंत्र सच्चे अर्थ में सच्चा स्वराज्य

भारत का संविधान कितना वृहद है, इसका इसी बात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इसके अंदर 28 राज्य व सात केन्द्र शासित राज्यों का भविष्य विधान संरक्षित है। कोई भी संविधान क्यों बनाया जाता है? शायद इसलिए कि वहाँ की व्यवस्था नियम प्रमाण सुचारु रूप से क्रियान्वित की जा सके। इसमें प्रत्येक राज्यों से एक विशेष प्रतिनिधि चुनकर उस राज्य का नेतृत्व करने के लिए आगे आता है। अगर इन प्रतिनिधियों को एक नया नाम दें तो इन्हें हम गण भी कह सकते हैं। जिस प्रकार शरीर को तंत्र या प्रणाली या सिस्टम के साथ जोड़ा जाता है, ठीक उसी प्रकार से संविधान रूपी तंत्र के कुछ गणों के आधार से प्रथम नागरिक का चयन होता है, जिसे राष्ट्रपति कहते हैं।

ठीक इसी प्रकार आने वाली राज्य व्यवस्था जिसे हम सतयुग का नाम देंगे, उसमें सबकुछ ऐसा ही होगा लेकिन वो सब स्वराज्य के आधार पर होगा। आपको विदित हो कि शास्त्रगत उल्लेखों में परमात्मा शिव की पूजा तो की ही जाती है साथ ही साथ उनके गणों की भी पूजा की जाती है। शिव के गणों में जो सर्वश्रेष्ठ होता है उसे सर्वप्रथम पूजा जाता है। यदि राजनीतिक शब्दावली में बोला जाए तो प्रथम गण या राष्ट्रपति विघ्न विनाशक गणेश को माना जाता है। इसीलिए हर पूजा की शुरुआत गणेश को टीका लगाकर ही करते हैं। इसलिए गणों में ईश अर्थात् सर्वश्रेष्ठ गणेश को माना जाता है। जब सतयुगी तंत्र बनेगा, उसमें राज्य व्यवस्था श्रेष्ठता के आधार से होगी। जो जितना श्रेष्ठ होगा उसके राज्य का दायरा, उसकी सीमाएँ बहुत अधिक होंगी, उसकी व्यवस्था बहुत सुचारु रूप से कार्य करेगी।

आने वाली राज्य व्यवस्था में स्वराज्यी ही सर्वश्रेष्ठ माना जाएगा। वहाँ पर राज्य योग्यतम की उत्तरजीविता (सर्वाइवल ऑफ द फीटेस्ट) या माइट इज़ राइट (जो शक्तिशाली है उसी का माना जाएगा) के आधार पर न होकर राइट इज़ माइट के आधार पर होगा। अर्थात् जो सत्य है, जिसके अंदर सत्यनिष्ठा की शक्ति है उसे सभी लोग राजा स्वीकार करेंगे। परंतु इसकी शुरुआत अपने आप को, स्वयं को नियंत्रित करने के आधार से होगी।

स्वराज्य से आएगी श्रेष्ठता

शायद हम ये सोच रहे हैं कि अगर किसी के पास ज्यादा धन है या वो बहुत प्रसिद्ध है या उसके पास जन-शक्ति अधिक है, उसके आधार से वो श्रेष्ठ है। कलियुग के हिसाब से ये बिल्कुल सत्य है, जिनके पास जन-बल, धन-बल, बाहु-बल है वो श्रेष्ठ है, लेकिन सबके दिलों से वो दूर हैं।

आने वाली राज्य व्यवस्था में स्वराज्यी ही सर्वश्रेष्ठ माना जाएगा। वहाँ पर राज्य योग्यतम की उत्तरजीविता (सर्वाइवल ऑफ द फीटेस्ट) या माइट इज़ राइट (जो शक्तिशाली है उसी का माना जाएगा) के आधार पर न होकर राइट इज़ माइट के आधार पर होगा। अर्थात् जो सत्य है, जिसके अंदर सत्यनिष्ठा की शक्ति है उसे सभी लोग राजा स्वीकार करेंगे। परंतु इसकी शुरुआत अपने आप को, स्वयं को नियंत्रित करने के आधार से होगी। कहने का अर्थ यह है कि जब हम अपने मन के राजा बन जाएंगे तो सभी लोग हमें स्वीकार करेंगे, क्योंकि हम खुद को स्वीकार करने लगेंगे।

आज हमारा तंत्र अव्यवस्थित क्यों है?

सबसे पहले हमें ये देखना है कि जो हमारे शारीरिक तंत्र हैं उसको क्या-क्या चाहिए। हम नित्य प्रति समय-समय पर शरीर को भोजन उपलब्ध कराते हैं, पानी देते हैं, वायु भी देते रहते हैं और साथ-साथ अग्नि का भी हम सेवन करते हैं। यदि इन सभी की कमी हो जाए तो हमारा शारीरिक तंत्र अव्यवस्थित हो जाता है। उसे व्यवस्थित करने में हमें समय लग जाता है। ठीक उसी प्रकार हमारा मानसिक तंत्र है जो आज पूरी तरह से अव्यवस्थित है। हम अपने निजी ज़िन्दगी में इतने ज्यादा व्यस्त हैं कि हमें ये भी ध्यान नहीं रहता कि हम मानसिक धरातल पर क्या रोप रहे हैं और उसकी उपज क्या होगी। आज हम दिन की शुरुआत भी नकारात्मक समाचारों से करते हैं जोकि हमारे मन का प्रथम निवाला है। कहा भी जाता है कि यदि आप सुबह-सुबह घर से खा के निकलो तो आपको हर जगह भोजन नसीब होता है, ठीक उसी प्रकार आप यदि सुबह-सुबह नकारात्मक भोजन करेंगे तो दिन भर आपको नकारात्मक भोजन ही नसीब होगा। इससे ही हमारा मानसिक तंत्र इतना अव्यवस्थित है कि वो रोगों में परिवर्तित हो गया है। लोग आज व्यसनों, दुर्व्यसनों के शिकार हैं या कह सकते हैं कि गुलाम हैं। जब हम बाहरी आदतों के गुलाम हो जाते हैं तो हमारी लगाम दूसरों के हाथों में चली जाती है और जब भी हम इनसे छूटना चाहते हैं तो आदतें हमें जबरदस्ती वो कार्य करने पर मजबूर कर देती हैं। इसके लिए सर्वप्रथम हमें अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनी है जिससे हम जो करना चाहें, जिस समय करना चाहें वो कर सकें। इसी को स्वराज्य अधिकारी कहा जाता है और स्वराज्य अधिकारी ही सच्चा राज्य अधिकारी है। हम सभी उस परमपिता परमात्मा शिव की संतान हैं या यों कहें कि हम सारे उसके गण हैं। यदि गण बनना है तो अपने पुरुषार्थ के आधार से ही हम बनेंगे। भाव यह है कि गणों की पूजा अलग-अलग दिनों पर उस दिन के व उस देवी-देवता के महत्व के आधार पर होती है। हमें सबसे पहले अपनी श्रेष्ठता व अपने आपको महत्व देकर अपनी महत्ता बढ़ानी पड़ेगी। जब सतयुगी तंत्र बनेगा तो उस समय हमें किस पद पर रखा जाएगा इसका निर्णय हमारे खुद के महत्व के आधार पर ही होगा। तो आइये हम सभी उस तंत्र का हिस्सा बनने के लिए अपने आपको स्वराज्य अधिकारी बनाने की रेस में लग जाएं। वो दिन दूर नहीं होगा जब हम भी उन गणों में शामिल होंगे जिसे लोग आज अपना आराध्य मानते हैं।

99 वर्ष की हुई दादी .. पेज 1 का शेष

ब्र.कु.रमेश, सूचना निदेशक ब्र.कु.करूणा तथा कार्यक्रम प्रबंधिका ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.भूपाल समेत कई देश व विदेश से आये लोगों ने केक काटा तथा उन्हें गुलदस्ते भेंट कर उनके दीर्घायु की कामना की। यहाँ दादी जानकी ने कहा कि मनुष्य का जीवन हमेशा लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए। ताकि वह दुनिया में कुछ श्रेष्ठ कर्म कर सके। उन्होंने कहा कि आज मुझे यह नहीं महसूस होता कि मैं 99 वर्ष की हूँ। लगता है जितना शरीर स्वस्थ रहे उतना मैं लोगों की सेवा कर सकूं। लोगों को अपने विवेक और अपने सद्व्यवहार से लोगों को नशामुक्त और स्वच्छता के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए। आज व्यसन बुरी तरह से लोगों पर हावी है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि हमें तो बाबा ने बाल्यकाल से ही ईश्वरीय शिक्षा देकर नये समाज और श्रेष्ठ संस्कार धारण करने के लिए प्रेरित किया। जो आज तक चल रहा है। हमें खुशी है कि परमात्मा का ज्ञान आज लाखों लोगों तक पहुँच गया है जिससे बड़ी संख्या में लोगों के जीवन में बदलाव आया है।

बाल्यकाल में ही अपनाया आध्यात्मिकता का रास्ता - दादी जानकी जब तरूणावस्था में ही थी तभी संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के संपर्क में आयी और आज तक वह लोगों को मूल्य और ज्ञान से सीचने का प्रयास कर रही हैं। विश्व के 140 देशों में फैली संस्था का प्रतिनिधित्व दादी जानकी कर रही हैं। 99 वर्ष की उम्र में अंतर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्थान का प्रतिनिधित्व करने वाली दुनिया की पहली महिला मुख्य प्रशासिका हैं।

बांटे गये कम्बल

दादी के जन्मदिन के अवसर पर दो हज़ार से भी ज्यादा श्रमिकों तथा आस-पास रहने वाले असहाय लोगों को कम्बल वितरित किये गये। साथ ही लोगों को नशामुक्ति के लिए प्रेरित करते हुए आस-पास की सफाई के साथ मन को भी स्वच्छ रखने की अपील की। सभा में उपस्थित श्रमिकों तथा स्थानीय लोगों से आस-पास को साफ-सुथरा रखने तथा नशामुक्त बनने का संकल्प कराया गया। बड़ी संख्या में आये लोगों ने दादी जी के संकल्पों को पूरा करने का उत्साहवर्धन किया।

चुरू। माननीय राजेन्द्र राठौड़,चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राज. सरकार को सात अरब सत्कर्मों की महायोजना की जानकारी देने के बाद महायोजना का फोल्डर भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन।

फाज़िलनगर-उ.प्र.। आदर्श इंटर कॉलेज में 'नैतिक मूल्यों की शिक्षा' देने के बाद प्रचार्य राघव पाण्डे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु. सूरज, ब्र.कु. शारदा तथा अन्य।

गौड़-गौताहत (नेपाल)। एक दिवसीय 'स्ट्रेस मैनेजमेंट प्रोग्राम' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए चीफ डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर मदन भुजेल, तीन न्याराधीश हरीश चन्द्र धुगाना, सूर्य अधिकारी, दण्डपानी शर्मा, ब्र.कु. विजय सिगदेल तथा ब्र.कु. जमुना।

गया-बिहार। 'राजनीति में आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए विधायक प्रेम कुमार जी। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. मोहन,ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

लखनऊ। ब्रह्माकुमारीज़ मार्ग के लाकार्पण का उद्घाटन करते हुए नगर निगम के वाइस चेयरमैन रजनीश कुमार।

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। युवाओं के लिए आयोजित '7 दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर' के समापन अवसर पर प्रमाण पत्र भेंट करते हुए विजय सांपला,माननीय राज्यमंत्री,सामाजिक न्याय एवं अधिकार, ब्र.कु. बृजमोहन तथा ब्र.कु. गीता।